Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

Original Article

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सामाजिक एवं राजनीतिक भूमिका: बिहार राज्य के संदर्भ में एक क्षेत्रीय अध्ययन

पंकज कुमार
शोधार्थी
स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

Manuscript ID:
JRD -2026-180423
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 4(A)
Pp 109-118
April- 2026
Submitted: 24 Mar. 2026
Revised: 31 Mar. 2026
Accepted: 15 Apr. 2026
Published: 30 April. 2026

सारांश

प्रस्तुत शोध-पत्र बिहार राज्य के विशिष्ट सामाजिक-राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की बहुआयामी एवं प्रभावशाली भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन करता है। यह शोध यह स्थापित करता है कि संघ बिहार में एक सशक्त राजनीतिक समाजीकरण-माध्यम के रूप में कार्य करता है तथा अपनी व्यापक सेवा-गतिविधियों के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों में गहरी जड़ें जमाने में सफल रहा है। बिहार की जाति-आधारित पहचान-राजनीति संघ के लिए एक चुनौती अवश्य उत्पन्न करती है, किन्तु संघ इस चुनौती को समायोजन एवं अनुकूलन की अपनी विशिष्ट क्षमता से संबोधित करता आया है। अध्ययन में गुणात्मक पद्धति के अन्तर्गत 25 अर्ध-संरचित साक्षात्कार, क्षेत्र-अवलोकन एवं द्वितीयक स्रोतों का त्रिकोणीय विश्लेषण किया गया है। सैद्धांतिक आधार के रूप में अल्मंड एवं वर्बा का राजनीतिक समाजीकरण सिद्धांत तथा ग्राम्शी का सांस्कृतिक आधिपत्य सिद्धांत अपनाया गया है। प्रमुख निष्कर्ष यह संकेत करते हैं कि संघ की सामाजिक सेवा-गतिविधियाँ व्यापक जनसमर्थन को दृढ़ करने में निर्णायक भूमिका निभाती हैं तथा शाखा-प्रणाली एक अनुशासित एवं प्रतिबद्ध नागरिक-निर्माण की अद्वितीय प्रक्रिया है। यह शोध-पत्र बिहार-केन्द्रित अनुभवजन्य राजनीतिक साहित्य में एक मौलिक योगदान प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: *राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, राजनीतिक समाजीकरण, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, जाति एवं विचारधारा, बिहार राजनीति, नागरिक समाज संगठन, सांस्कृतिक आधिपत्य।*

परिचय

भारतीय लोकतंत्र की विशेषता यह है कि यहाँ राजनीतिक प्रक्रियाएँ केवल संसद या विधानमंडल की दीवारों तक सीमित नहीं रहतीं, अपितु नागरिक समाज के असंख्य संगठन, सांस्कृतिक संस्थाएँ एवं स्वयंसेवी निकाय उन प्रक्रियाओं को गहराई से प्रभावित करते हैं। इन्हीं संगठनों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एक ऐसी असाधारण संस्था है जिसने 1925 में स्थापना के पश्चात् से आज तक भारतीय जनमानस, सामाजिक ताने-बाने एवं राजनीतिक विमर्श को अनवरत एवं सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार द्वारा नागपुर में स्थापित यह संगठन अपनी अनुशासित शाखा-प्रणाली, सुदृढ़ संगठनात्मक अनुशासन तथा राष्ट्रीय पुनर्जागरण की वैचारिक प्रतिबद्धता के बल पर देश के कोने-कोने में अपनी जड़ें जमाने में सफल रहा है

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
पंकज कुमार, शोधार्थी, स्नातकोत्तर राजनीति विज्ञान विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

How to cite this article:
कुमार, पंकज. (2026). राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सामाजिक एवं राजनीतिक भूमिका: बिहार राज्य के संदर्भ में एक क्षेत्रीय अध्ययन. Journal of research & development, 18(4(A)), 109–118.
https://doi.org/10.5281/zenodo.20390499

Quick Response Code:
Website:
https://jrdrvb.org/
DOI:
10.5281/zenodo.20390499

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

बिहार राज्य जो अपनी जाति-आधारित राजनीति, सामाजिक संघर्षों एवं मण्डलोत्तर पहचान-राजनीति के लिए विख्यात है, संघ के अध्ययन के लिए एक विशिष्ट एवं जटिल प्रयोगशाला प्रस्तुत करता है। यहाँ यादव, कुर्मी, दलित एवं अति-पिछड़े वर्गों के बीच जो राजनीतिक ध्रुवीकरण हुआ है, वह बिहार की राजनीति को अद्वितीय बनाता है। इसी जटिल संरचना में संघ की अनुकूलन-क्षमता एवं सेवा-समर्पण का वास्तविक परीक्षण होता है। राष्ट्रीय स्तर पर संघ के अध्ययन पर विपुल साहित्य उपलब्ध है, किन्तु बिहार की इस विशिष्ट संरचना में संघ की भूमिका के अनुभवजन्य अध्ययन का गम्भीर अभाव है।

यह शोध तीन उद्देश्यों से अभिप्रेरित है: प्रथम, बिहार में संघ की सामाजिक भूमिका का क्षेत्र-आधारित विश्लेषण; द्वितीय, उसके राजनीतिक प्रभाव की प्रक्रिया को समझना; तथा तृतीय, बिहार की क्षेत्रीय विशिष्टताओं में संघ की अनुकूलन-रणनीति का मूल्यांकन।

शोध कथन:

यह शोध-पत्र यह स्थापित करता है कि संघ बिहार में एक वास्तविक एवं प्रभावशाली राजनीतिक समाजीकरण-माध्यम के रूप में कार्य करता है, उसकी सामाजिक गतिविधियाँ जनसमर्थन को प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सुदृढ़ करती हैं, और बिहार की जातीय पहचान-राजनीति की चुनौती के बावजूद संघ की वैचारिक उपस्थिति एवं सांगठनिक क्षमता निरन्तर विस्तारित हो रही है।

शोध प्रश्न एवं परिकल्पनाएँ

शोध प्रश्न

इस अध्ययन के मार्गदर्शन हेतु निम्नलिखित तीन मूलभूत प्रश्न निर्धारित किए गए हैं:

1. क्या राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ बिहार में राजनीतिक समाजीकरण की प्रक्रिया को सक्रिय एवं प्रभावशाली रूप से संचालित करता है?
2. संघ की सामाजिक सेवा-गतिविधियाँ किस प्रकार व्यापक जनसमर्थन एवं राजनीतिक जुटाव का आधार बनती हैं?
3. बिहार की जाति-आधारित सामाजिक संरचना में संघ किस प्रकार अपने वैचारिक प्रसार को अनुकूलित करता है?

परिकल्पनाएँ

1. संघ की संगठनात्मक संरचना, विशेषतः शाखा-प्रणाली एवं संस्कार वर्ग, बिहार में एक प्रभावशाली राजनीतिक समाजीकरण-माध्यम के रूप में कार्य करती है।
2. शिक्षा, सेवा एवं सामुदायिक हस्तक्षेप की गतिविधियाँ जनसमर्थन एवं मतदान-अभिरुचि को सुदृढ़ करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
3. बिहार की जातीय संरचना एवं मण्डल-पश्चात् पहचान-राजनीति संघ के लिए एक चुनौती प्रस्तुत करती है, जिसे वह अपनी अनुकूलन-क्षमता से निरन्तर संबोधित करता है।

अवधारणात्मक स्पष्टीकरण एवं प्रचालनात्मक परिभाषा

किसी भी शोध की प्रामाणिकता उसमें प्रयुक्त अवधारणाओं की स्पष्टता पर निर्भर करती है। इस शोध में प्रयुक्त अवधारणाओं एवं उनके मापन-संकेतकों को सारणी 1 में प्रस्तुत किया गया है:

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

सारणी 1: प्रमुख अवधारणाओं की प्रचालनात्मक परिभाषाएँ

अवधारणा	परिभाषा	प्रचालनात्मक संकेतक
सामाजिक भूमिका	शिक्षा, सेवा एवं सामुदायिक हस्तक्षेप की वे गतिविधियाँ जो व्यापक जन-कल्याण का आधार बनती हैं	विद्यालय-संख्या, सेवा शिविर, बाढ़-राहत कार्यक्रम, संस्कार वर्ग की संख्या
राजनीतिक भूमिका	वे गतिविधियाँ जो राजनीतिक अभिरुचि, मतदान-व्यवहार एवं दल-संगठन को सुदृढ़ करती हैं	शाखा-घनत्व, कार्यकर्ता-संख्या, निर्वाचन-भागीदारी, भाजपा से समन्वय
क्षेत्रीय अध्ययन	बिहार राज्य की विशिष्ट जाति-राजनीतिक संरचना के संदर्भ में अनुभवजन्य विश्लेषण	3 जिलों का क्षेत्र-अवलोकन, 25 साक्षात्कार, निर्वाचन-आँकड़ा
जाति-राजनीति	जाति-पहचान पर आधारित राजनीतिक जुटाव एवं मतदान-व्यवहार	OBC, SC/ST जनगणना अनुपात, पार्टी-मत-प्रतिशत का जाति-वार विश्लेषण

स्रोत: शोधार्थी द्वारा निर्मित।

साहित्य समीक्षा

वैचारिक अध्ययन

संघ के हिन्दुत्व-आधारित वैचारिक ढाँचे पर क्रिस्टोफ जाफ्रलो (1996) का अध्ययन अभी भी सर्वाधिक उद्धृत है। उनके अनुसार, संघ का राष्ट्रवाद एक सांस्कृतिक पुनर्जागरण का प्रयास है जो भारतीय सभ्यता के गौरव को पुनर्स्थापित करने की दीर्घकालिक आकांक्षा से प्रेरित है। बिहार जैसे ग्रामीण-बाहुल्य राज्यों में यह वैचारिक आधार संघ को जमीनी स्तर पर जनसंपर्क का एक नैतिक आधार प्रदान करता है। एंडरसन एवं दामले (1987) ने संघ की संगठनात्मक संस्कृति का गहन विवेचन किया है और स्वीकार किया है कि संघ की अनुशासन-परम्परा एवं सांगठनिक निरन्तरता उसे भारत के नागरिक समाज में एक विशिष्ट स्थान देती है। रामचन्द्र गुहा (2007) भी यह स्वीकार करते हैं कि संघ ने स्वतंत्र भारत में एक सुसंगत सांस्कृतिक एजेंडे के साथ करोड़ों नागरिकों को जोड़ने में सफलता प्राप्त की है।

संगठनात्मक अध्ययन

शाखा-प्रणाली को संघ की मूल शक्ति बताने वाले विद्वान (गोविन्दाचार्य, 2002) इस बात पर एकमत हैं कि यह प्रणाली लोकतांत्रिक भागीदारी एवं नागरिक-निर्माण का एक अभूतपूर्व प्रयोग है। बिहार के भोजपुर एवं गया जिलों में किए गए क्षेत्र-अवलोकन से यह स्पष्ट हुआ कि शाखाएँ सामाजिक रूप से विविध वर्गों में संगठन की जड़ें स्थापित करने का प्रयास करती हैं। अनुषंगी संगठनों ABVP, VHP, वनवासी कल्याण आश्रम की विद्यालय-संचालन, वनांचल-सेवा एवं युवा-संगठन में भूमिका संघ की बहुआयामी उपस्थिति को रेखांकित करती है।

राजनीतिक प्रभाव-अध्ययन

मिलन वैष्णव (2017) ने जाति एवं धार्मिक पहचान के अंतर्संबंध को मतदान व्यवहार से जोड़ा है, जो इस शोध के लिए अत्यन्त प्रासंगिक है। योगेन्द्र यादव एवं सुहास पलशीकर के चुनावी विश्लेषण यह प्रमाणित करते हैं कि बिहार में 2014 एवं 2019 में भाजपा की उल्लेखनीय सफलता में संघ के बूथ-प्रबंधन एवं कार्यकर्ता-नेटवर्क की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। तोमस ब्लॉम हैन्सन (1999) ने दर्शाया है कि हिन्दुत्व एक आधुनिक सांस्कृतिक चेतना के रूप में बिहार के शिक्षित नगरीय मध्यवर्ग में स्वाभाविक अपील रखता है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

साहित्यिक रिक्तता

उपरोक्त समृद्ध साहित्य के बावजूद बिहार की विशिष्ट जाति-राजनीतिक संरचना के संदर्भ में संघ की भूमिका पर केन्द्रित अनुभवजन्य शोध की गम्भीर कमी है। बिहार की मण्डलोत्तर जाति-राजनीति में संघ की अनुकूलन-रणनीति एवं विस्तारित उपस्थिति का विश्लेषण, विशेषकर 2014-2024 के काल में, प्रायः अनुपस्थित है। यही रिक्तता इस शोध की केन्द्रीय प्रेरणा एवं मौलिक योगदान का आधार है।

सैद्धांतिक ढाँचा: इस शोध में तीन परस्पर पूरक सैद्धांतिक आधारों को एकीकृत रूप में अपनाया गया है:

सारणी 2: सैद्धांतिक ढाँचा एवं अध्ययन में उसका प्रयोग

सिद्धांत	प्रतिपादक	मूल अवधारणा	इस अध्ययन में प्रयोग
राजनीतिक समाजीकरण	अल्मंड एवं वर्बा (1963)	संगठन राजनीतिक मूल्य व व्यवहार निर्मित करते हैं	शाखा-प्रणाली को एक सशक्त समाजीकरण-एजेंट के रूप में विश्लेषण
सांस्कृतिक आधिपत्य	ग्राम्शी (1971)	सहमति-निर्माण के माध्यम से सांस्कृतिक नेतृत्व स्थापित होता है	सेवा-कार्य को सांस्कृतिक नेतृत्व की रणनीति के रूप में देखना
पहचान-राजनीति	कोठारी, वार्ष्णेय	जाति एक सशक्त राजनीतिक पहचान है	संघ की 'हिन्दू' पहचान एवं बिहार की जाति-पहचान के सह-अस्तित्व का विश्लेषण

स्रोत: शोधार्थी द्वारा निर्मित।

शोध-पद्धति

शोध की प्रकृति

यह शोध मूलतः गुणात्मक एवं अन्वेषणात्मक प्रकृति का है। बिहार जैसे राज्य में सामाजिक-राजनीतिक अनुभव बहुत जटिल एवं स्थानीय संदर्भ-निर्भर हैं; अतः गुणात्मक पद्धति अधिक उपयुक्त है, क्योंकि यह संख्याओं से परे उस अनुभव, भावना एवं अर्थ को पकड़ती है जो राजनीतिक वास्तविकता का निर्माण करते हैं।

अध्ययन-क्षेत्र एवं प्रतिदर्श

सारणी 3: अध्ययन-क्षेत्र — चयनित जिले

जिला	प्रकृति	जाति-संरचना की विशेषता	चयन का आधार
पटना	नगरीय	मिश्रित, शिक्षित मध्यवर्ग प्रधान	प्रशासनिक एवं राजनीतिक केन्द्र
भोजपुर	अर्ध-नगरीय	भूमिहार, राजपूत, यादव बाहुल्य	ऐतिहासिक राजनीतिक सक्रियता
गया	ग्रामीण	दलित, पिछड़ा वर्ग बाहुल्य	जाति-समन्वय एवं संघ-सक्रियता का क्षेत्र

स्रोत: शोधार्थी द्वारा निर्मित।

आँकड़े-संग्रह

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

प्राथमिक स्रोत

25 अर्ध-संरचित साक्षात्कार लिए गए, जिनमें संघ कार्यकर्ता, प्रचारक, स्थानीय नागरिक, राजनीतिक विश्लेषक एवं शिक्षाविद सम्मिलित थे। इसके अतिरिक्त तीनों जिलों में शाखाओं एवं सेवा-कार्यक्रमों का प्रत्यक्ष क्षेत्र-अवलोकन किया गया।

द्वितीयक स्रोत

भारत निर्वाचन आयोग का चुनावी आँकड़ा, सरकारी प्रतिवेदन, संघ के प्रकाशन, समाचार-पत्र एवं संबंधित शोध-पत्र।

विश्लेषण-उपकरण

विषयगत विश्लेषण एवं सामग्री विश्लेषण द्वारा साक्षात्कारों को व्यवस्थित रूप से विश्लेषित किया गया है। त्रिकोणीकरण पद्धति द्वारा विभिन्न स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं का परस्पर सत्यापन किया गया।

बिहार में संघ: ऐतिहासिक संदर्भ

सारणी 4: बिहार में संघ के विकास के प्रमुख चरण

काल-खण्ड	प्रमुख घटनाक्रम	बिहार पर प्रभाव
1930-1947	प्रारम्भिक प्रसार, राष्ट्रीय चेतना-जागरण	शिक्षित वर्ग में राष्ट्रभक्ति का संचार
1948-1974	कांग्रेस-काल में सामाजिक-सेवा का विस्तार	ग्रामीण क्षेत्रों में सेवा-गतिविधियों का जाल
1975-1977	आपातकाल — JP आन्दोलन में साहसिक भागीदारी	लोकतंत्र-रक्षा में महत्त्वपूर्ण योगदान; व्यापक जनविश्वास
1990-2000	मण्डल आयोग के दौर में सांगठनिक पुनर्संरचना	विविध वर्गों तक पहुँचने की नई रणनीति का निर्माण
2001-2013	नीतीश-भाजपा गठबंधन काल	सुशासन आन्दोलन में संघ की प्रासंगिकता पुनर्स्थापित
2014-2024	मोदी-लहर एवं संगठनात्मक विस्तार	बूथ-प्रबंधन एवं मतदाता-जागरूकता में निर्णायक भूमिका

स्रोत: *विभिन्न द्वितीयक स्रोतों के आधार पर शोधार्थी द्वारा निर्मित।*

बिहार में संघ का आगमन 1930 के दशक में हुआ। प्रारम्भिक काल में संघ ने राष्ट्रीय स्वाभिमान एवं सामाजिक अनुशासन की भावना को जागृत करने का कार्य किया। 1975-77 के आपातकाल में जयप्रकाश नारायण के 'सम्पूर्ण क्रान्ति' आन्दोलन में संघ-कार्यकर्ताओं की साहसिक एवं निर्णायक भागीदारी ने उन्हें जनमानस में एक लोकतंत्र-प्रेमी एवं निःस्वार्थ शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया। 1990 का दशक संघ के लिए पुनर्संरचना का काल था, मण्डल राजनीति की चुनौती का सामना करते हुए संघ ने अपनी सामाजिक समावेशिता की रणनीति को और अधिक विस्तृत किया।

अनुभवजन्य चित्र: बिहार में संघ की उपस्थिति

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

सारणी 5: बिहार में संघ की उपस्थिति के सांकेतिक संकेतक (2023)

संकेतक	अनुमानित स्थिति	आधार / सीमा
सक्रिय शाखाएँ	2,500+ (सांकेतिक अनुमान)	संघ प्रकाशन; स्वतंत्र सत्यापन सीमित
अनुषंगी संगठन	12+ निकाय (ABVP, VHP, BMS आदि)	द्वितीयक स्रोत
एकल विद्यालय	500+ (विभिन्न जिलों में)	वनांचल एवं ग्रामीण क्षेत्रों में केन्द्रित
वार्षिक सेवा-कार्यक्रम	1000+ (अनुमानित)	समाचार-पत्र रिपोर्ट; अपूर्ण डेटा
2019 में भाजपा मत-प्रतिशत (बिहार)	23.6%	भारत निर्वाचन आयोग
2024 में NDA का बिहार में सीटें	30/40 लोकसभा सीटें	भारत निर्वाचन आयोग

यह आँकड़े सांकेतिक हैं एवं स्वतंत्र सत्यापन की दृष्टि से सीमित हैं। भोजपुर एवं गया जिलों में क्षेत्र-अवलोकन से यह संकेत मिलता है कि संघ की शाखाएँ रणनीतिक दृष्टि से सामाजिक रूप से प्रभावशाली क्षेत्रों में अत्यन्त सक्रिय हैं, तथा नए वर्गों तक पहुँचने का प्रयास निरन्तर जारी है।

संघ की सामाजिक भूमिका: विश्लेषण

बिहार में विद्या भारती एवं एकल विद्यालयों का एक सुविस्तृत जाल बिछा हुआ है जो सरकारी शिक्षा-तंत्र से वंचित ग्रामीण एवं वनांचल क्षेत्रों में शिक्षा की ज्योति जलाता है। साक्षात्कार क्रमांक 7 में एक कार्यकर्ता का कथन था, 'हम बच्चों को अक्षर के साथ-साथ संस्कार भी देते हैं।' यह शिक्षा-कार्य समाज में सामाजिक विश्वसनीयता एवं नैतिक नेतृत्व स्थापित करने का एक अत्यन्त प्रभावशाली माध्यम है। ग्राम्शी के ढाँचे में देखें तो यह सहमति-निर्माण का एक विशिष्ट एवं स्थायी प्रकार है जो दीर्घकालिक वैचारिक प्रभाव की सुदृढ़ पृष्ठभूमि तैयार करता है।

बिहार में प्रतिवर्ष बाढ़ का संकट लाखों परिवारों को प्रभावित करता है। संघ की सेवा-शाखाएँ प्रत्येक बाढ़-काल में सबसे पहले राहत-कार्यों में उपस्थित हो जाती हैं। नि:शुल्क चिकित्सा शिविर, रक्तदान शिविर एवं कोविड-काल में जीवन-रक्षक सामुदायिक सहायता-कार्य ने ग्रामीण जनमानस में संघ की एक अत्यन्त सकारात्मक एवं विश्वसनीय छवि निर्मित की है। यह 'सेवा' की राजनीति एक गहरी सामाजिक पूँजी उत्पन्न करती है जो H_2 परिकल्पना के अनुरूप दीर्घकालिक एवं व्यापक जनसमर्थन का ठोस आधार बनती है।

संघ की सेवा-गतिविधियाँ समाज के व्यापक वर्गों तक पहुँचने के सतत् प्रयास का प्रमाण हैं। वनवासी कल्याण आश्रम एवं एकल विद्यालय जैसे कार्यक्रम विशेष रूप से वंचित समुदायों के उत्थान पर केन्द्रित हैं। यद्यपि बिहार के कुछ क्षेत्रों में दलित एवं अल्पसंख्यक वर्गों तक संघ की पहुँच अभी भी विस्तार की प्रक्रिया में है, तथापि यह संगठन की व्यापक समावेशी आकांक्षा को इंगित करता है जिसका वास्तविकीकरण निरन्तर जारी है।

संघ की राजनीतिक भूमिका: विश्लेषण

संघ की शाखा-प्रणाली एक दीर्घकालिक एवं अनुशासित राजनीतिक समाजीकरण की अद्वितीय प्रक्रिया है। शाखा में प्रतिदिन एकत्रित होने वाले स्वयंसेवक सामूहिक गान, शारीरिक अभ्यास, बौद्धिक वर्ग एवं पारस्परिक संवाद के माध्यम से एक सुदृढ़ वैचारिक एवं नैतिक साँचे में ढलते हैं, यह अल्मंड-वर्बा के समाजीकरण सिद्धांत का जीवन्त प्रमाण है। यह प्रक्रिया H_1 परिकल्पना को बलपूर्वक प्रमाणित करती है।

बिहार में भाजपा के अनेक वरिष्ठ नेता संघ की शाखा से निकले हुए हैं। यह कार्यकर्ता-पाइपलाइन संघ को भाजपा का सबसे महत्त्वपूर्ण एवं अपरिहार्य संगठनात्मक स्तम्भ बनाती है। चुनाव-काल में यही समर्पित स्वयंसेवक मतदाता-जागरूकता, बूथ-प्रबंधन एवं प्रचार-अभियान में अग्रणी एवं निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

सारणी 6: बिहार में भाजपा का चुनावी प्रदर्शन एवं संघ-समन्वय (सांकेतिक)

चुनाव वर्ष	भाजपा की लोकसभा सीटें (बिहार)	मत-प्रतिशत	संघ भूमिका का संकेत
2009	12/40	15.8%	सामान्य संगठनात्मक उपस्थिति
2014	22/40	29.4%	बूथ-प्रबंधन में उत्कृष्ट भागीदारी — ऐतिहासिक सफलता
2019	17/40 (NDA=39)	23.6% (भाजपा)	मतदाता-जागरूकता अभियान में केन्द्रीय भूमिका
2024	12/40 (NDA=30)	सांकेतिक	सामाजिक समीकरण के पुनर्गठन में सक्रिय भूमिका

स्रोत: *भारत निर्वाचन आयोग*

साक्षात्कार क्रमांक 14 में एक वरिष्ठ राजनीतिक विश्लेषक का कथन था, 'शाखा-नेटवर्क के बिना अर्ध-नगरीय एवं ग्रामीण निर्वाचन क्षेत्रों में इतनी तेजी से मतदाताओं तक पहुँचना सम्भव नहीं था।' यह कथन संघ के अतुलनीय संगठनात्मक योगदान को रेखांकित करता है। बिहार में राम-जानकी परम्परा एवं सांस्कृतिक बोध की गहरी जड़ें हैं, जो संघ के वैचारिक विमर्श को एक स्वाभाविक एवं व्यापक सामाजिक स्वीकृति प्रदान करती हैं। नगरीय शिक्षित मध्यवर्ग में संघ का वैचारिक प्रभाव विशेष रूप से सुदृढ़ है, और ग्रामीण क्षेत्रों में सेवा-कार्यक्रमों के माध्यम से यह प्रभाव निरन्तर विस्तारित हो रहा है।

क्षेत्रीय गतिकी: बिहार की विशिष्टता

बिहार की राजनीति में जाति-पहचान एक सशक्त तत्त्व है और संघ इस वास्तविकता को स्वीकार करते हुए अपनी रणनीति को अनुकूलित करता है। यादव, कुर्मी, कोइरी एवं दलित जातियों तक संघ की 'हिन्दू एकता' की अपील को विस्तारित करना एक दीर्घकालिक एवं जटिल प्रक्रिया है। साक्षात्कार क्रमांक 19 के एक सामाजिक कार्यकर्ता के शब्दों में, 'हिन्दुत्व एकता की बात करता है, यह आदर्श है जिसकी ओर काम करते रहना होगा।' यह कथन H_3 परिकल्पना की जटिलता को रेखांकित करता है तथा संघ की अनुकूलन-प्रक्रिया की आवश्यकता को उजागर करता है।

सारणी 7: बिहार में संघ की उपस्थिति — नगरीय बनाम ग्रामीण तुलना

आयाम	नगरीय क्षेत्र (पटना)	अर्ध-नगरीय (भोजपुर)	ग्रामीण (गया)
शाखा-सक्रियता	उच्च एवं प्रभावशाली	सक्रिय एवं विस्तारशील	विस्तार की प्रक्रिया में
प्रमुख जनाधार	शिक्षित मध्यवर्ग	कृषक एवं व्यापारी वर्ग	विविध सामाजिक वर्ग
वैचारिक प्रभाव	सुदृढ़ एवं व्यापक	उल्लेखनीय	क्रमशः बढ़ता हुआ
सेवा-कार्यक्रम	स्वास्थ्य शिविर, शिक्षा	बाढ़-राहत, संस्कार	एकल विद्यालय
नए वर्गों तक पहुँच	सक्रिय प्रयास जारी	सक्रिय प्रयास जारी	सेवा-कार्य के माध्यम से

स्रोत: *शोधार्थी का क्षेत्र-अवलोकन एवं साक्षात्कार।*

बिहार में युवा जनसंख्या का अनुपात राष्ट्रीय औसत से अधिक है। ABVP के माध्यम से विश्वविद्यालय-परिसरों में संघ की पहुँच एक नई पीढ़ी को राष्ट्रीय चेतना एवं सांस्कृतिक गर्व से जोड़ने का महत्त्वपूर्ण अवसर प्रदान करती है। रोजगार-संकट एवं आर्थिक चुनौतियों

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

के बावजूद बिहारी युवा में सांस्कृतिक पहचान एवं सामाजिक उत्थान की आकांक्षा प्रबल है, जिसे संघ अपने सेवा एवं संस्कार-कार्यक्रमों के माध्यम से सम्बोधित करने का प्रयास करता है।

तुलनात्मक दृष्टिकोण: बिहार, उत्तर प्रदेश एवं महाराष्ट्र

सारणी 8: तुलनात्मक विश्लेषण — तीन राज्यों में संघ का प्रभाव

आयाम	बिहार	उत्तर प्रदेश	महाराष्ट्र
जाति-प्रभाव	अत्यन्त प्रबल — चुनौती एवं अवसर दोनों	प्रबल, किन्तु संघ द्वारा आंशिक रूप से समायोजित	मध्यम; संघ की पकड़ सुदृढ़
शाखा-घनत्व	मध्यम एवं विस्तारशील	उच्च	अत्यन्त उच्च
भाजपा-समन्वय	घनिष्ठ एवं प्रभावशाली	घनिष्ठ	घनिष्ठ
सामाजिक-सेवा दायरा	विस्तारशील	विस्तृत	सर्वाधिक विस्तृत
वैचारिक प्रभाव	नगरीय मध्यवर्ग में सुदृढ़; ग्रामीण में प्रगतिशील	व्यापक	ऐतिहासिक आधार सशक्त
OBC जोड़ने की क्षमता	बढ़ती हुई — रणनीतिक प्रयास जारी	आंशिक सफलता	अपेक्षाकृत अधिक

***स्रोत:** जाफ्रलो (1996), वैष्णव (2017)*

इस तुलना से स्पष्ट होता है कि बिहार में संघ की जड़ें क्रमशः गहरी होती जा रही हैं। यद्यपि महाराष्ट्र एवं उत्तर प्रदेश में संगठनात्मक घनत्व अधिक है, किन्तु बिहार की जटिल जाति-राजनीति में संघ की उपस्थिति और प्रभाव का तथ्य स्वयं में उसकी संगठनात्मक क्षमता एवं अनुकूलनशीलता का प्रमाण है।

आलोचनात्मक विश्लेषण

संघ की सबसे बड़ी शक्ति उसका अद्वितीय संगठनात्मक अनुशासन, निरन्तरता एवं निःस्वार्थ सेवा-भाव है। जहाँ राजनीतिक दल चुनाव-काल में ही सक्रिय होते हैं, वहाँ संघ की शाखाएँ वर्षभर क्रियाशील रहती हैं। यह दीर्घकालिक उपस्थिति एक स्थायी एवं गहरी सामाजिक पूँजी निर्मित करती है। इसके अतिरिक्त, विभिन्न अनुषंगी संगठनों के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों तक पहुँचने की क्षमता संघ को नागरिक समाज के अन्य संगठनों से सर्वथा अलग एवं विशिष्ट बनाती है।

संघ के समक्ष प्रमुख चुनौती यह है कि दलित एवं पिछड़े वर्गों को 'हिन्दू एकता' के वृहद् ढाँचे में प्रभावशाली ढंग से समाहित किया जाए। अम्बेडकरवादी एवं मण्डलवादी विमर्श के साथ संवाद स्थापित करना संघ के भविष्य के विस्तार के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। बिहार में जहाँ मुस्लिम जनसंख्या लगभग 17% है, वहाँ सामाजिक सद्भाव की रणनीति को और अधिक समावेशी बनाना संघ की दीर्घकालिक सफलता के लिए आवश्यक है। संघ की अनुशासित संरचना इसे इन चुनौतियों का व्यवस्थित रूप से सामना करने में सक्षम बनाती है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष बहुस्तरीय एवं सूक्ष्म हैं।

प्रथमतः H_1 एवं H_2 की सबल पुष्टि होती है, संघ बिहार में एक प्रभावशाली राजनीतिक समाजीकरण-माध्यम के रूप में स्थापित है, तथा उसकी सेवा-गतिविधियाँ व्यापक जनसमर्थन को सुदृढ़ करने में निर्णायक भूमिका निभाती हैं।

द्वितीयतः H_3 के संदर्भ में यह स्पष्ट होता है कि बिहार की जातीय पहचान एवं मण्डलोत्तर राजनीतिक चेतना संघ के लिए एक जटिल चुनौती प्रस्तुत करती है, किन्तु संघ इस चुनौती को अपनी अनुकूलन-क्षमता, सेवा-समर्पण एवं संगठनात्मक शक्ति से निरन्तर संबोधित कर रहा है।

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

तृतीयतः ग्राम्शी के सांस्कृतिक आधिपत्य के ढाँचे में देखें तो संघ ने बिहार के नगरीय मध्यवर्ग एवं अनेक ग्रामीण क्षेत्रों में एक सुदृढ़ सांस्कृतिक नेतृत्व स्थापित किया है तथा अन्य क्षेत्रों में यह प्रक्रिया निरन्तर जारी है।

शैक्षणिक योगदान: यह अध्ययन नागरिक समाज संगठनों एवं राजनीतिक समाजीकरण के अंतर्संबंध पर एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्रीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। यह बिहार-केन्द्रित अनुभवजन्य शोध की रिक्तता को संबोधित करता है तथा यह स्थापित करता है कि भारतीय लोकतंत्र में किसी भी वैचारिक संगठन की भूमिका को जाति, धर्म एवं क्षेत्रीय पहचान के परस्पर संवाद से अलग करके नहीं समझा जा सकता।

शोध की सीमाएँ

किसी भी गुणात्मक शोध की भाँति, इस अध्ययन में भी कुछ अपरिहार्य सीमाएँ विद्यमान हैं जिनका पारदर्शी उल्लेख शोध की विश्वसनीयता के लिए आवश्यक है:

प्रथम, नमूना सीमा: इस शोध में केवल 3 जिलों तथा 25 साक्षात्कारों का आधार लिया गया है। बिहार के 38 जिलों की विविधता को यह नमूना पूर्णतः प्रतिनिधित नहीं करता। दक्षिण बिहार, सीमांचल एवं उत्तर बिहार के बाढ़-क्षेत्र की विशिष्टताएँ इस अध्ययन में शामिल नहीं हैं।

द्वितीय, डेटा सीमा: संघ के सांगठनिक आँकड़े सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं हैं, अतः सारणी 5 में प्रयुक्त संकेतक अनुमानित हैं।

तृतीय, कालखण्ड सीमा: यह शोध मुख्यतः 2014-2024 के काल पर केन्द्रित है। दीर्घकालिक अनुदैर्ध्य दृष्टि इसमें सम्भव नहीं थी।

चतुर्थ, शोधार्थी-पूर्वाग्रह की सम्भावना: गुणात्मक साक्षात्कारों में व्याख्यात्मक पूर्वाग्रह की सम्भावना को त्रिकोणीकरण एवं सदस्य-जाँच द्वारा न्यूनतम करने का प्रयास किया गया है।

नीति-निहितार्थ एवं भविष्य के शोध की दिशाएँ

नीति-निहितार्थ

1. नागरिक समाज संगठनों के सेवा-कार्यों को सरकारी योजनाओं के साथ समन्वित करने के लिए एक सकारात्मक ढाँचे की आवश्यकता है जो संगठनात्मक स्वतंत्रता को प्रोत्साहित करे।
2. एकल विद्यालय जैसी स्वयंसेवी शिक्षा-संस्थाओं के साथ सरकारी शिक्षा-तंत्र का समन्वय ग्रामीण बिहार में शिक्षा की गुणवत्ता को और बेहतर बना सकता है।
3. दलित एवं अल्पसंख्यक समुदायों की राजनीतिक भागीदारी सुनिश्चित करने वाली नीतियाँ सहभागितापूर्ण शासन को और सुदृढ़ कर सकती हैं।

भविष्य के शोध की दिशाएँ

1. बिहार के सभी 38 जिलों का व्यापक सर्वेक्षण-आधारित अध्ययन;
2. 2000-2024 के काल का दीर्घकालिक अनुदैर्ध्य विश्लेषण;
3. संघ एवं अन्य नागरिक समाज संगठनों की भूमिका का तुलनात्मक अध्ययन;
4. महिलाओं एवं युवाओं पर संघ के प्रभाव का लिंग- एवं आयु-आधारित अध्ययन।

सन्दर्भ-सूची

1. अल्मंड, जी.ए. एवं वर्बा, एस. (1963). the Civic Culture: Political Attitudes and Democracy in Five Nations. Princeton University Press.
2. एंडरसन, डब्ल्यू. एवं दामले, एस. (1987). the Brotherhood in Saffron: The Rashtriya Swayamsevak Sangh and Hindu Revivalism. Westview Press.
3. जाफ्रलो, सी. (1996). The Hindu Nationalist Movement and Indian Politics. Hurst & Company.
4. गुहा, रा. (2007). India After Gandhi: The History of the World's Largest Democracy. HarperCollins.
5. ग्राम्शी, अ. (1971). Selections from the Prison Notebooks. Lawrence & Wishart.
6. कोठारी, र. (1970). Politics in India. Little, Brown & Company.
7. वार्ष्णेय, अ. (2002). Ethnic Conflict and Civic Life: Hindus and Muslims in India. Yale University Press.
8. वैष्णव, मि. (2017). When Crime Pays: Money and Muscle in Indian Politics. Yale University Press.

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-4(A)| April-2026

9. हैन्सन, टी.ब्लॉम. (1999). The Saffron Wave: Democracy and Hindu Nationalism in Modern India. Princeton University Press.
10. सक्सेना, एन.सी. (2019). RSS and Politics in India. ज्ञान पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली।
11. शाह, गी. (1990). Social Movements in India. Sage Publications.
12. पलशीकर, सु. एवं यादव, यो. (2003). 'Third Electoral System in India?' Economic and Political Weekly, 38(34), 3640-3649.
13. सिंह, अ. (2021). 'बिहार में जाति एवं राजनीतिक परिवर्तन.' राजनीति विज्ञान समीक्षा, 14(2), 45–67।
14. भारत निर्वाचन आयोग. (2009, 2014, 2019, 2024). लोकसभा निर्वाचन परिणाम: बिहार. नयी दिल्ली।
15. शर्मा, रा. (2022). 'Hindutva and Caste Politics in Post-Mandal Bihar.' Journal of South Asian Studies, 45(1), 78–95.
16. कुमार, सं. (2020). 'Electoral Politics in Bihar: Caste, Religion and Development.' Studies in Indian Politics, 8(2), 187–203.